जै जै सियाराम
बृजेन्द्र

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।

भावार्थ:-अतुल बल के धाम, सोने के पर्वत के समान कांतियुक्त शरीर वाले, दैत्यरूपी वन के लिए अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, संपूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी, श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त पवनपुत्र श्री हनुमान जी को मैं प्रणाम करता हूं।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

अर्थ: हे मनोहर, वायुवेग से चलने वाले, इन्द्रियों को वश में करने वाले, बुद्धिमानो में सर्वश्रेष्ठ। हे वायु पुत्र, हे वानर सेनापति, श्री रामदूत हम सभी आपके शरणागत है॥

Hanuman tandav stotram

वन्दे सिन्दूरवर्णाभं लोहिताम्बरभूषितम् ।

रक्ताङ्गरागशोभाढ्यं शोणापुच्छं कपीश्वरम्॥

हे श्री हनुमान जी! आप सिंन्दुर वर्ण के तथा लाल रंग के वस्त्रों अपनी देह पर धारण करते हो। आपको नमन करता हूं। हे कपीश्वर! आपके अंग रक्त की तरह लाल रंग के हैं। आपकी पुंछ शोणा की तरह है।

भजे समीरनन्दनं, सुभक्तचित्तरञ्जनं, दिनेशरूपभक्षकं, समस्तभक्तरक्षकम् ।

सुकण्ठकार्यसाधकं, विपक्षपक्षबाधकं, समुद्रपारगामिनं, नमामि सिद्धकामिनम् ॥१।।

पवनपुत्र आपको याद करता हूं। मैं आपकी भक्ति अपने मन से करता हू। आपको जब मनुष्य अपने अच्छे कर्मों के द्वारा याद करते हैं, तो आप उस मनुष्य के समस्त कार्यों को सफलता देते हो और विपक्ष वाले का बाधा उत्पन्न करते हो। समुद्र में गमन करने वाले और समस्त कार्यों को सिद्धि देने वाले पवनपुत्र हनुमान जी को मैं नतमस्तक होकर अभिवादन करता हूं।

सुशङ्कितं सुकण्ठभुक्तवान् हि यो हितं वचस्त्वमाशु धैर्य्यमाश्रयात्र वो भयं कदापि न ।

इति प्लवङ्गनाथभाषितं निशम्य वानराऽधिनाथ आप शं तदा, स रामदूत आश्रयः ॥२।।

हे श्री हनुमान जी! आपको जब कोई मनुष्य शुद्ध एवं पवित्र भावना से स्मरण करता है तो उस मनुष्य के हित की रक्षा करते हो। जो मनुष्य आपकी आराधना अपने धैर्य को रखते हुए करते हो, तो उस मनुष्य को डर नहीं लगता। इस तरह प्लवंगनाथ जी ने बताया कि आप रघुनाथ के दुत हो। हे वानराधीश । मुझे पर आपकी अनुकृपा बनी रहे।

सुदीर्घबाहुलोचनेन, पुच्छगुच्छशोभिना, भुजद्वयेन सोदरीं निजांसयुग्ममास्थितौ ।

कृतौ हि कोसलाधिपौ, कपीशराजसन्निधौ, विदहजेशलक्ष्मणौ, स मे शिवं करोत्वरम् ॥ ३॥

सुशब्दशास्त्रपारगं, विलोक्य रामचन्द्रमाः, कपीश नाथसेवकं, समस्तनीतिमार्गगम् ।

प्रशस्य लक्ष्मणं प्रति, प्रलम्बबाहुभूषितः कपीन्द्रसख्यमाकरोत्, स्वकार्यसाधकः प्रभुः ॥

प्रचण्डवेगधारिणं, नगेन्द्रगर्वहारिणं, फणीशमातृगर्वहृद्दृशास्यवासनाशकृत् ।

विभीषणेन सख्यकृद्विदेह जातितापहृत्, सुकण्ठकार्यसाधकं, नमामि यातुधतकम् ॥ ५॥

नमामि पुष्पमौलिनं, सुवर्णवर्णधारिणं गदायुधेन भूषितं, किरीटकुण्डलान्वितम् ।

सुपुच्छगुच्छतुच्छलंकदाहकं सुनायकं विपक्षपक्षराक्षसेन्द्र-सर्ववंशनाशकम् ॥ ६॥

रघूत्तमस्य सेवकं नमामि लक्ष्मणप्रियं दिनेशवंशभूषणस्य मुद्रीकाप्रदर्शकम् ।

विदेहजातिशोकतापहारिणम् प्रहारिणम् सुसूक्ष्मरूपधारिणं नमामि दीर्घरूपिणम् ॥ ७॥

हे हनुमानजी! आप भगवान श्रीरामचन्द्र के सेवक हो और रामानुज लक्ष्मण जी के अतिप्रिय हो। सुर्य की तरह आपका तेज गहना है।अंगुठी दिखाकर कहते हो ये मेरे लिए तुच्छ है। विदेहनन्दिनी का शौक मिटाने वाले हो और दुष्टों पर प्रहार करने वाले हो। जब आप छोटे रुप धारण करते हो फिर अपनू विशाल रुप को धार करने वाले हो। हे हनुमानजी! मैं आपको नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूं।

नभस्वदात्मजेन भास्वता त्वया कृता महासहा यता यया द्वयोर्हितं ह्यभूत्स्वकृत्यतः ।

सुकण्ठ आप तारकां रघूत्तमो विदेहजां निपात्य वालिनं प्रभुस्ततो दशाननं खलम् ॥ ८॥

इमं स्तवं कुजेऽह्नि यः पठेत्सुचेतसा नरः कपीशनाथसेवको भुनक्तिसर्वसम्पदः ।

प्लवङ्गराजसत्कृपाकताक्षभाजनस्सदा न शत्रुतो भयं भवेत्कदापि तस्य नुस्त्विह ॥ ९॥

हे श्री हनुमान जी! जो कोई मनुष्य आपके इस स्तोत्र के मंत्र को पढ़ता है, तो मनुष्य के स्वामी! तो आप समस्त तरह के सुख एवं संपदा देते हो। आप उस मनुष्य पर राजा की कृपा दृष्टि करवाकर उसकी रक्षा हमेशा करते हो। मनुष्य के दुश्मन के भय का दमन करते हो।

नेत्राङ्गनन्दधरणीवत्सरेऽनङ्गवासरे ।

लोकेश्वराख्यभट्टेन हनुमत्ताण्डवं कृतम् ॥ १०॥

लोकेश्वराख्यभटेन ने हनुमान ताण्डव स्तोत्र में श्री हनुमानजी का अरदास करते हुए कहते हैं कि हे हनुमानजी! आपका निवास मेरे समस्त शरीर पर हो। आपको मैं अपने नेत्रों की दृष्टि से देखना चाहता हूं। आप मेरे नेत्रों में निवास करें।

ॐ इति श्री हनुमत्ताण्डव स्तोत्रम्॥